भारत से गेहूँ निर्यात पर प्रतिबंध

प्रिलिम्स के लिये:

गेहूँ, विदेश व्यापार महानिदेशक (DGFT), FCI

मेन्स के लिये:

बढ़ती मुद्रास्फीति और मुद्दे, संवृद्धि एवं विकास, मुद्रास्फीति से निपटने के लिये सरकार के कदम

चर्चा में क्यों?

संयुक्त अरब अमीरात (UAE) ने भारत से आयातित गेहूँ और आटे के निर्यात एवं पुनर्निर्यात को निलंबित कर दिया है। मूलतः यह एक आश्वासन है कि UAE जो कुछ भी आयात करता है उसका उपयोग केवल घरेलू खपत के लिये किया जाएगा।

- यह घटनाक्रम भारत द्वारा अपने घरेलू बाज़ार, पड़ोसी और कमज़ोर देशों की मांग को पूरा करने के लिये गेहूँ के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने के एक महीने बाद हुआ है।
- संयुक्त अरब अमीरात के अर्थव्यवस्था मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि यह निर्णय अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम के मद्देनज़र आया है जिसने व्यापार प्रवाह को प्रभावित किया है। मंत्रालय ने भारत के साथ ठोस और रणनीतिक संबंधों की सराहना की है जो संयुक्त अरब अमीरात एवं भारत के बीच संबंधों को मज़बूती प्रदान करते हैं, खासकर दोनों देशों के बीच व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किया जाने के बाद।

भारत से गेहूँ निर्यात की स्थिति:

- भारत, चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा गेहूँ उत्पादक देश है लेकिन वैश्विक गेहूँ व्यापार में इसका 1% से भी कम हिस्सा है। यह गरीबों के लिये रियायती भोजन उपलब्ध कराने हेतु इसका बहुत बड़ा हिस्सा अपने पास रखता है।
- इसके शीर्ष निर्यात बाज़ार बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका तथा साथ ही संयुक्त अरब अमीरात (UAE) हैं।
- **गेहूँ के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने के कारण:**
    - भारत ने 13 मई, 2022 से गेहूँ के निर्यात को निलंबित कर दिया है। सरकारी राजपत्र में प्रकाशित एक अधिसूचना में विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT) ने इस प्रतिबंध को सही ठहराते हुए जानकारी दी है कि गेहूँ की बढ़ती वैश्विक कीमतों ने न केवल भारत में बल्कि पड़ोसी व कमजोर देशों में भी खाद्य सुरक्षा पर दबाव डाला है।
        - हालाँकि निर्यात की अनुमति तब दी जाएगी जब भारत सरकार अन्य देशों को उनकी खाद्य सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने की अनुमति देती है और यदि उनकी सरकारें अनुरोध करती हैं।
    - **गेहूँ के उत्पादन में कमी के कारण भी प्रतिबंध पर विचार किया गया था, क्योंकि इसके उत्पादन कि अवधि में मार्च-अप्रैल के दौरान देश हीटवेव** से प्रभावित हुआ था, साथ ही भारतीय खाद्य निगम (FCI) बफर स्टॉक के लिये पर्याप्त स्टॉक जुटाने में असमर्थ था।
    - **बढ़ती महँगाई ने भी इस कदम को प्रेरित किया। भारत में थोक मूल्य सूचकांक (WPI) 2022** की शुरुआत के 2.26 प्रतिशत से बढ़कर अब 14.55 हो गया है। खाद्य और ईंधन की बढ़ती कीमतों के कारण खुदरा मुद्रास्फीति भी अप्रैल में आठ साल के उच्च स्तर (7.79 प्रतिशत) पर पहुँच गई।

गेहूँ निर्यात पर भारत के प्रतिबंध का प्रभाव:

- **भारत पर प्रभाव:**
    - भारत की घरेलू खाद्य मुद्रास्फीति पर गेहूँ के निर्यात प्रतिबंध का प्रभाव कम होने की संभावना है। यह निर्यात प्रतिबंध एक पूर्व-प्रभावी कदम है और स्थानीय गेहूँ की कीमतों को काफी हद तक बढ़ने से रोक सकता है।
    - हालाँकि घरेलू गेहूँ के उत्पादन की संभावना हीटवेव कि वजह से सीमित होने के कारण स्थानीय गेहूँ की कीमतें भौतिक रूप से कम नहीं हो सकती हैं।

- **वशि्व पर प्रभाव:**
    - [यूक्रेन-रूस युद्ध]() के कारण **दुनिया के ब्रेड बास्केट** के रूप में प्रसदि्ध क्षेत्र में गेहूँ के उत्पादन में गरिावट आई है। रूस और यूक्रेन संयुक्त रूप से दुनिया में गेहूँ नर्यात में 25% कहिस्सिेदारी रखते हैं। इससे गेहूँ की कीमतों में बढ़ोतरी हुई है और आपूर्तकि मामले में खराब स्थतिउित्पन्न हो गई है।
    - भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा गेहूँ उत्पादक और सबसे बड़े उपभोक्ताओं में से एक है। जब सरकार ने बढ़ती कीमतों के कारण गेहूँ के नर्यात पर प्रतबिंध लगाने का फैसला कयिा, तो अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में इसका वरिोध हुआ।
    - **एशयिा में ऑस्ट्रेलयिा और भारत को छोड़कर अधकिांश अन्य अर्थव्यवस्थाएँ घरेलू खपत के लयिे आयातति गेहूँ पर नर्भिर हैं** तथा वैश्वकि स्तर पर गेहूँ की ऊँची कीमतों के कारण इन पर जोखमि उत्पन्न हो गया हैं, भले ही वे सीधे भारत से आयात न करें।
    - यह हालयिा नर्यात प्रतबिंध दुनिया भर में कीमतों को बढ़ाएगा और अफ्रीका एवं एशयिा में गरीब उपभोक्ताओं को प्रभावति करेगा।

भारत के लयिे गेहूँ नर्यात का महत्त्व:

- **शुद्ध वदिेशी मुद्रा अर्जक:** यह भारत को एफसीआई के गोदामों में गेहूँ के खराब स्टॉक को कम करने में मदद करेगा और नर्यात बढ़ाकर वदिेशी बाज़ारों पर कब्ज़ा करने का अवसर प्रदान करेगा।
    - नर्यात में वृद्धसि वदिेशी मुद्रा भंडार में वृद्धहिोगी और भारत के चालू खाता घाटे में कमी आएगी।
- **भारत की सद्भावना छवि:** भारत ज़रूरतमंद और कमज़ोर देशों को गेहूँ का नर्यात करके उन देशों के साथ अपने संबंधों को मज़बूत कर सकता है, जनिके साथ उसके भावनात्मक संबंध थे एवं अन्य देशों के साथ संबंधों को सामान्य बनाने में मदद मलिेगी।
- **वविधि अवसर:** अवसरों में गेहूँ जैसे खाद्यान्न का नर्यात और वनिर्मिति वस्तुओं के उन गंतव्यों को नर्यात कयिे जाने की संभावना शामलि थी जनिके लयिे आपूर्तअिवशि्वसनीय हो गई थी।
- **लागत प्रतस्पिर्द्धात्मकता:** जब वैश्वकि कीमतों में वृद्धहिुई है, तब भारत की गेहूँ की दरें अपेक्षाकृत प्रतस्पिर्द्धी हैं।
- **नर्यात टोकरी में वविधिता लाना:** यह भारत को उन देशों के साथ व्यापार संबंध बनाने में मदद करेगा जनिके साथ उसका व्यापार नगण्य या कम था।

आगे की राह

- यद्यपभिारत द्वारा कदम खाद्य सुरक्षा सुनशि्चति करने और घरेलू कीमतों को स्थरि करने के वास्तवकि आधार पर यह उठाया गया है, लेकनि इसे दुनिया को उसी तरह से संप्रेषति करने की आवश्यकता है, अन्यथा इससे वशि्व राजनीतमिें भारत की प्रतष्ठिा का नुकसान होगा और इसकी छवखिराब होगी।
- भारत को यह सुनशि्चति करना चाहयिे कि कमज़ोर और पड़ोसी देशों की खाद्य सुरक्षा बाधति न हो, अन्यथा इससे राजनयकि संबंधों में तनाव पैदा होगा।

गेहूँ:

- **गेहूँ के बारे में:**
    - यह चावल के बाद भारत में दूसरी सबसे महत्त्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है।
    - यह देश के उत्तर और उत्तर-पश्चमिी भाग की मुख्य खाद्यान्न फसल है।
    - गेहूँ रबी की एक फसल है जसिे पकने के समय ठंडे मौसम और तेज़ धूप की आवश्यकता होती है।
    - हरति क्रांतकिी सफलता ने रबी फसलों वशिेषकर गेहूँ के वकिास में योगदान दयिा।
    - कृषहिेतु मैक्रो मैनेजमेंट मोड, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मशिन और राष्ट्रीय कृषविकिास योजना गेहूँ की खेती को समर्थन प्रदान करने के लयिे कुछ सरकारी पहलें हैं।
- **तापमान:** तेज़ धूप के साथ 10-15 डग्रिी सेल्सयिस (बुवाई के समय) और 21-26 डग्रिी सेल्सयिस (पकने व कटाई के समय) के बीच।
- **वर्षा:** लगभग 75-100 सेमी.।
- **मृदा का प्रकार:** अच्छी तरह से सूखी उपजाऊ दोमट और चकिनी दोमट (गंगा-सतलुज मैदान तथा दक्कन का काली मट्टिी क्षेत्र)।
- **शीर्ष गेहूँ उत्पादक राज्य: उत्तर प्रदेश> पंजाब> हरयिाणा> मध्य प्रदेश>> राजस्थान> बहिार> गुजरात**।

यूपीएससी सविलि सेवा, वगित वर्षों के प्रश्न:

प्रश्न. नम्निलखिति फसलों पर वचिार कीजयिे:

1. कपास
2. मूँगफली
3. चावल
4. गेहूँ

इनमें से कौन सी खरीफ फसलें हैं?

(a) केवल 1 और 3

(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1, 2 और 3
(d) केवल 2, 3 और 4

उत्तर: C

व्याख्या:

- भारत में फसल के तीन मौसम हैं, रबी, खरीफ और ज़ायद। रबी की फसल अक्तूबर से दसिंबर तक सर्दियों में बोई जाती है और गर्मियों में अप्रैल से जून तक काटी जाती है।
- देश के वभिन्नि हस्सिों में मानसून की शुरुआत के साथ खरीफ की फसलें उगाई जाती हैं और इनकी कटाई सतिंबर- अक्तूबर में की जाती है।
- रबी और खरीफ के मौसम के बीच गर्मियों के महीनों के दौरान एक छोटा मौसम होता है जसि ज़ायद के मौसम के रूप में जाना जाता है। ज़ायद' के दौरान उत्पादति कुछ फसलें तरबूज, कस्तूरी, ककड़ी, सब्जयिाँ और चारा फसलें हैं।
- **खरीफ फसलें:** चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, फंगिर बाजरा या रागी (अनाज), अरहर (दाल), सोयाबीन,मूँगफली (तलिहन), कपास, आदि। **अत: 1, 2 और 3 सही हैं।**
- **रबी की फसलें:** गेहूँ, जौ, जई (अनाज), चना (दाल), अलसी, सरसों (तलिहन), आदि। अत: 4 सही नहीं है।

अत: वकिल्प (C) सही उत्तर है।

स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ban-of-wheat-export-from-india